सूर्य पुराण

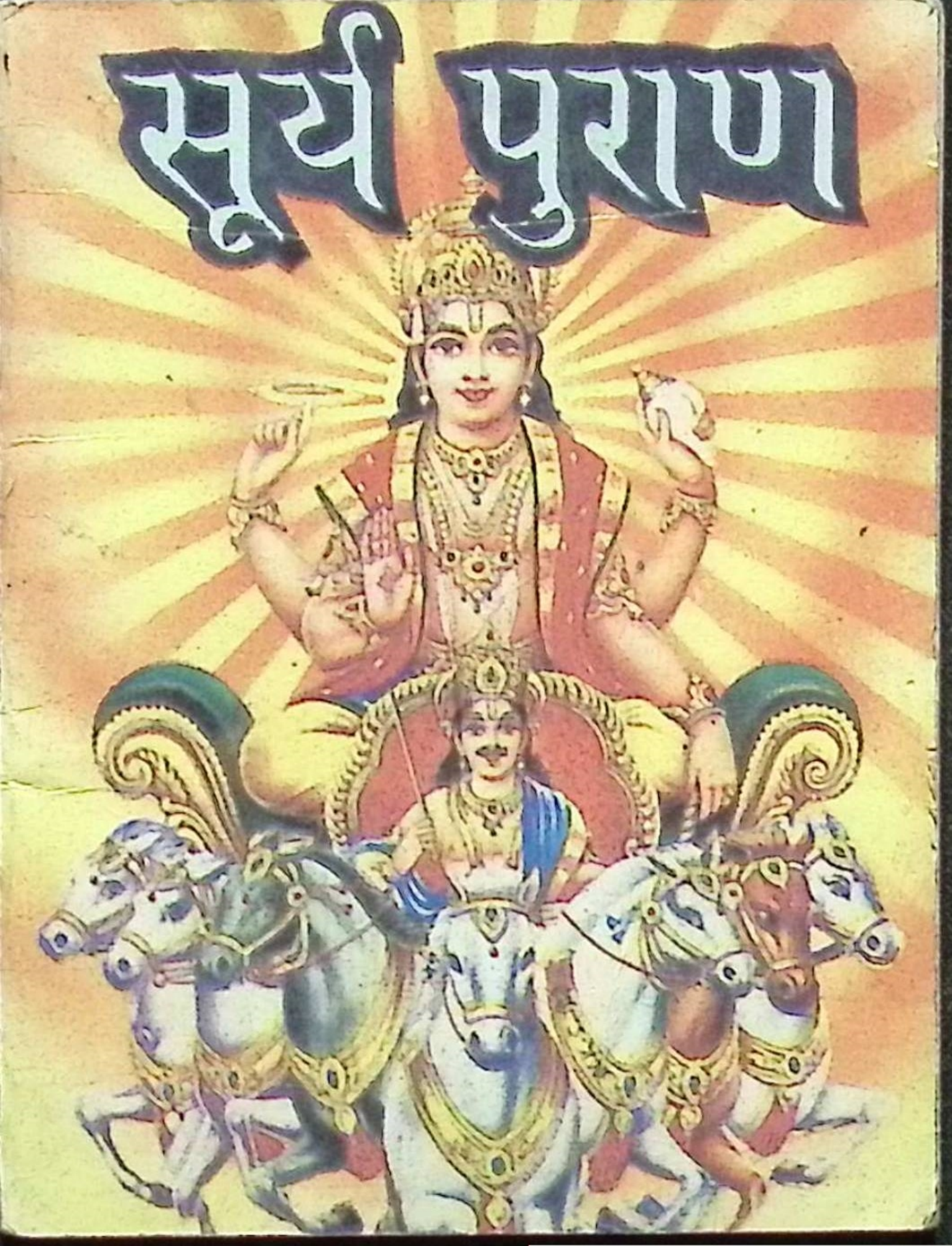

मूल्य ८/-

* श्री: *

सूर्य-पुराण

दो०-बन्दि कंजपद जोरि कर, श्रीपति गौरि गणेश ।
तुलसिदास कहते सुयश, बरणौं कथा दिनेश ॥
बन्दौं चरण हृदय धरि, प्रेम भक्ति मन लाय ।
महिमा अगम अपार है, साहब ज्ञान सहाय ॥

सूर्य देवता सुमिरौं तोहीं ।
सुमिरत ज्ञान बुद्धि दो मोहीं ॥
ज्योति स्वरूप भानु बलवाना ।
तेज प्रताप है अग्नि समाना ॥
तुम आदित परमेश्वर स्वामी ।
अलख निरञ्जन अन्तर्यामी ॥
बरनि न जाइ ज्योति कर लीला ।
धर्म धुरन्धर परम सुशीला ॥
ज्योति कला चहुँ ओर विराजै ।
जगमग कानन कुण्डल छाजै ॥

नील वरण वर हय असवारी ।
ज्ञान निधान धर्म व्रतधारी ॥
तासु कथा मैं कहौं बखानी ।
पुरुषोत्तम आनन्दघन ज्ञानी ॥
आदित महिमा अगम अपारा ।
तीन भुवन जेहि छवि उजियारा ॥

दो०-आदित कथा पुनीत अति, गावहिं शम्भु सुजान ।
तीन लोक छवि ज्योतिमय, करौं प्रताप बखान ॥

सुनहु उमा आदित परतापा ।
वरणौं विमल सूर्य कर जापा ॥
सूर्य महातम सुनहु भवानी ।
कहौं पुनीत कथा शुभ बानी ॥
बाँझ सुने एक मास पुराना ।
मन क्रम वचन धरे व्रत ध्याना ॥
द्वादश वर्ष कर अतवारा ।
नेम धर्म एक मधुर अहारा ॥

कुशा बिछाइ करै विश्रामा ।
हर्षित जपै सूर्य कर नामा ॥
आदित वासर जबहीं आवै ।
सुन पुराण अरु विप्र जिमावै ॥
इतना टेक धरै तिय जबहीं ।
होहिं दयाल दयानिधि तबहीं ॥
होहिं पाँच सुत अग्नि-समाना ।
धर्म - धुरन्धर ज्ञान निधाना ॥
तिनसों जीति सकै नहिं कोई ।
विद्यावान सुलक्षण होई ॥

दो०-बाँझ कथा मन लाइके, टेक धरै व्रतध्यान ।
निश्चय उपजे पाँच सुत, जोधा अग्नि समान ॥

इति श्रीसूर्यमहावन्ध्यास्त्रीवर्णनो नाम प्रथमोऽध्यायः।१।

कथा कहौं रवि अमृत बानी ।
मन स्थिर कर सुनहु भवानी ॥
कुष्ठ बरनि हो जाके अंगा ।

सुनै मनुज सो भानु प्रसंगा ॥
रवि दिन भोजन करै अलोना ।
पुष्प सुवास चढ़ावै दोना ॥
विप्र बोलि रवि होम करावै ।
सोइ भस्म लै अंग लगावै ॥
निश्चय कुष्ठ बरन छय जाई ।
धन महिमा है सूर्य गोसाँई ॥

दो०-जाके कुष्ठ शरीर में, सो नित सुनै पुरान ।
निश्चय सूर्य-प्रताप से, पावे काया दान ॥

इति श्रीमहासूर्यमहाकुष्ठवर्णनोनाम द्वितीयोऽध्यायः।२।

सूर्य कथा मैं कहौं बखानी ।
मन स्वतन्त्र होइ सुनहु भवानी ॥
जाके वरण अंग महँ होई ।
सूरज कथा पाठ कर सोई ॥
करे पाँच व्रत नर अतवारा ।
नेम धर्म एक मधुर अहारा ॥
चन्दन अगर लेप तन करई ।

निशि दिन ध्यान सूर्य पर धरई ॥
निश्चय अंग वरन मिटि जाई ।
धनि महिमा है सूर्य गोसाँई ॥
भानु चरित्र सुनै मन लाई ।
निश्चय कुष्ठ बरन छय जाई ॥

दो०-जाके उपजे कुष्ठ तन, सो नित सुने पुरान ।
धन महिमा आदित्य की, करौं प्रताप बखान ॥

सूर्य कथा मैं कहौं बुझाई ।
मन क्रम वचन सुनो चितलाई ॥
जो नर होइ अन्धंयुग लोचन ।
सो यह कथा सुनै दुःखमोचन ॥
करै लोन बिनु एक अहारा ।
विविध भाँति करि नेम अचारा ॥
पीपर तरु तर सुनै पुराना ।

पावै लोचन अन्ध सुजाना ॥
अन्धा लोचन निश्चय पावै ।
जो यह कथा सुचित मन गावै ॥

दो०-अन्ध लहै निश्चय नयन, जो जाने प्रभु एक ।
पुलकित परम पुनीत यह, धरे कथा पर टेक ॥

इति श्रीमहासूर्यअन्धलोचनप्राप्तिनाम तृतीयोऽध्यायः।३।

यात्रा जो नर करै विदेशा ।
सो नित सुनै पुरान सुरेशा ॥
निश्चय तासु सकल शुभ होई ।
लाभ भवन चलि आवै सोई ॥
जौं चिन्तित रहे ऋण अधिकारी ।
सो यह कथा करै अनुसारी ॥
निश्चय ऋणहु सकल मिट जाई ।
धनि महिमा है सूर्य गोसाँई ॥

दो०-यात्रा को नर जब चले, तब यह सुने पुरान ।
निश्चय मन वांछित सकल, पुरवहिं श्रीभगवान ॥

इति श्रीमहासूर्यमनवांछितदातानाम चतुर्थोऽध्यायः।४।

ऐसी महिमा आदित देवा ।
करहिं जासु सुर नर मुनि सेवा ॥
मिटे गाढ़ निश्चय मन तासू ।
पुलक प्रेम मन हरष हुलासू ॥
दीनानाथ निरंजन साँई ।
महिमा जाकर बरनि न जाई ॥
सूर्य कथा मैं कहौं बखानी ।
मन स्थिर करि सुनहु भवानी ॥
करे दण्डवत अरु व्रत ध्याना ।
सो तनु ले यहि कथा समाना ॥
तेज प्रताप बरनि नहिं जाई ।
सूर्य चरित्र सुनहु मन लाई ॥
कहौं सुभग यह कथा पुनीता ।
रवि प्रताप मैं भयो अजीता ॥

दो०-जो महिमा आदित्य की, बरनी प्रेम उछाह ।
सुनहु उमा पुलकित तन, कीरति प्रभु अवगाह ॥

कहौं पुनीत कथा शुभ बानी ।
बहुरि महातम सुनहु भवानी ॥
कार्तिक चैत पुनीत दिन भारी ।
साजहु अरघ सकल नरनारी ॥
चन्दन अगर कपूर की बाती ।
पूजा भक्ति करें बहु भाँती ॥
मनोकामना जो मन राखे ।
पुलकित होइ भानु गुन भाषे ॥
तेहि कल्याण करें भगवाना ।
तेज पुञ्ज प्रभु कृपा निधाना ॥

दो०-लीला अगम अपार अति, कृपासिन्धु भगवान ।
वरणौं कथा पुनीत यह, मन स्थिर कर ध्यान ॥

सुनहु उमा यह चरित अपारा ।
भानु महातम बहु विस्तारा ॥
सिंहलद्वीप नगर एक नाऊ ।
तहाँ निवास परीक्षित राऊ ॥

तहाँ पुनीत धर्म्म नर नारी ।
तासु भवन एक सुता कुमारी ॥
सो नित करै भानु की पूजा ।
सेवे सूर्य्य और नहिं दूजा ॥
श्रद्धा नेम कथा मन लाई ।
करै हर्ष सो शुभ दिन राई ॥
तासु भवन प्रभु करै कलेवा ।
तीन लोक नहिं जाने भेवा ॥
एक समय अति अचरज भयऊ ।
सुरसरि तीर गमन तेहि ठयऊ ॥
चीर उतारि भूमि पर धरेऊ ।
कन्या पग जल भीतर करेऊ ॥
मज्जन करन लाग सो बाला ।
हिये विराजत मोती माला ॥
तेहि अवसर नारद मुनि आये ।
कन्या देखि परम सुख पाये ॥

ठाढ़ भये मुनि सुरसरि तीरा ।
लीन्ह उठाय सुताकर चीरा ॥
कन्या जल में करै पुकारी ।
पट दीजै मुनि धर्म विचारी ॥
कह नारद सुनु कन्या बाता ।
मोसन करहु पुरुष कर नाता ॥
सुनु मुनि ज्ञानी भये तुम बौरा ।
ऐसे बचन कहो जिन औरा ॥
अस बानी कस कहेउ मुनीसा ।
हम सब कन्या लाख पचीसा ॥
बिनती मोर सुनहु मन बानी ।
देव बसन तुम मुनि विज्ञानी ॥
दो०–नग्ननारि जलमहँ खड़ी, कह मुनि सन कर जोरि ।
कृपासिन्धु जाता धरम, अम्बर दीजै मोरि ॥
जब कन्या बहु विनती लाई ।
तेहि क्षण नारद रहे लजाई ॥

अम्बर दे मुनि भवन सिधाये ।
तहँ तबहीं श्री शंकर आये ॥
सो सुनि मुनिहि शाप बस कीन्हा ।
सो आदित से कहबे लीन्हा ॥
जहँ मैं करत रही असनाना ।
अम्बर ले गये मुनि विज्ञाना ॥
ताही क्षण शिव तहाँ सिधारे ।
गौर बदन अंग गिरिजा धारे ॥
शक्ति सहित प्रभु नाये माथा ।
हर्षि शम्भु देखै मुनि नाथा ॥
कुशल कहा मुनि शिव मुसकाई ।
बैठन कहि सब कथा बुझाई ॥
पूछा प्रभु तब शिव कर जोरी ।
नाथ सुनहु यह विनती मोरी ॥
कहँ अपराध कीन्ह मुनि भारी ।

सो अब मोसन कहहु विचारी ।।
तब प्रभु कहा सुनहु हो भोरा ।
यह कन्या सेवक है मोरा ।।
सुनहु हिये धरिके मुनि ज्ञानी ।
किये कुदृष्टि कुधर्म न जानी ।।
कारण सोइ शाप अब दयऊ ।
तुरत अंग वरण मुनि लयऊ ।।
इतना कह मुनि मन मुस्काना ।
ज्ञान हीन तब मुनि पहचाना ।।
वचन सुनत मुनि क्रोधित भयऊ ।
कन्या सँग लै मुनि पहँ गयऊ ।।

दो०-वचन सुनत क्रोधित भये, क्रोध न हिये समाय ।
कौतुक कीन्ह अयुक्त तुम, मोसन कहहु बुझाय ।।

जोरि पाणि मुनि वचन सुनाये ।
धरि पद कमल सूर्य गुन गाये ।।
कह मुनि सुनु प्रभु बात हमारी ।

भा मोसन अपराध है भारी ॥
यह अपराध क्षमा प्रभु कीजै ।
दीनानाथ अनुग्रह कीजै ॥
तब प्रभु कहा सुनो मम बानी ।
उतके लोग सकल अज्ञानी ॥
तेहि अपराध लेहु मुनि शापा ।
जस कीन्हेउ तस भोगहु पापा ॥

दो०-त्रिभुवन स्वामी मोहिं पर, करहु ज्योति परकास ।
हर्षित गावहिं गुण विमल, कहाँ मोर भव बास ॥

इति श्रीसूर्यपुराणअपसध-शापोनाम पञ्चमोऽध्यायः।५।

पंपापुर एक नगर को नाऊ ।
हलधर विप्र तहाँ एक राऊ ॥
नगर बसै मानो कैलाशा ।
धर्म कथा तहँ होइ प्रकाशा ॥
पूजन करैं भानु दिन राती ।
निशिदिन टेक धरै बहु भाँती ॥

कोटि अग्नि चारहुँ दिशि माहीं ।
श्री सूर्य को आश्रम ताहीं ॥
रतन जड़ित सर तहाँ सुहावा ।
कनक घाट चहुँ ओर बनावा ॥
तहाँ खम्भ एक परम विशाला ।
शत योजन सो उच्च रसाला ॥
तेहि खम्भा आदित कर बासा ।
जात खम्भ सो लागि अकासा ॥
योजन लक्ष सो उदय कराहीं ।
योजन सहस एक पल जाहीं ॥
प्रात होत उदयाचल वासा ।
अस्ताचल पर करहिं निवासा ॥
यह विधि आदित आवहिं जाहीं ।
समुझ पुनीत कथा मन माहीं ॥
आदित कथा सुनहु मन लाई ।

मैं तोहि अर्थ कहौं समुझाई ॥

दो०-धन्य भानु ईश्वर प्रभु, महिमा अगम अपार ।
तीन लोक छवि ज्योतिमय, है जाकर उजियार ॥
कुष्टी ध्यावै भक्ति कर, पावै काया दान ।
अन्तर्यामी दयानिधि, कृपा करहिं भगवान ॥
सुरनर मुनि अस्तुति करहिं, हौं प्रसन्न भगवान ।
जो हित मन व्रत नर करै, श्रद्धा प्रीति समान ॥
सब गुण आगर बुद्धिवर, सुन्दर शील निधान ।
मन वच कर्म हर्षयुत, जो नर करहिं बखान ॥

इति श्रीसूर्यमहाअस्ताचलवर्णनोनाम षष्ठोऽध्यायः।६।

गिरिजा कह्यो सो कहौ गुसाँई ।
सो मोहि अर्थ कहौ समुझाई ॥
कहन लगे शिव कथा रसाला ।
जेहि विधि ऊगहिं पूर्व कृपाला ॥
गिरिजा सुनो कथा मन लाई ।
मैं तोहिं अर्थ कहौं समुझाई ॥
पूर्व दिशा एक श्रीपुर देशा ।
तहँ के राजा रूप महेशा ॥

सदा करे आदित की पूजा ।
सेवै सूर्य और नहिं दूजा ॥
यहि विधि सकल नगर उजियारा ।
यहाँ एक है अगम अपारा ॥
सहस कोस परवत परमाना ।
बसै तहाँ आदित बलवाना ॥
उगे जाय तह करे निवासा ।
पुनि पश्चिम दिशि करहिं प्रकाशा ॥
मन वच कर्म कथा वर गाई ।
सूर्य चरित विधि तुमहिं सुनाई ॥
सुनि गिरिजा सुन्दर यह बानी ।
बल प्रताप सुनि मन हरषानी ॥
धन्य भानु जिनकी यह लीला ।
धर्म धुरन्धर धरम सुशीला ॥
जो नर कथा सूर्य को गावै ।

चढ़ि विमान वैकुण्ठ सिधावै ॥
सूर्य चरित सुनि अमृत बानी ।
अस्तुति हर्षित करैं भवानी ॥

छंद-हे जगस्वामी अन्तर्यामी ज्योति कला छवि उदित महा ।
गुनातीत निधाना श्रीभगवाना करौ कृपा हे धर्म महा ॥
छवि ज्योति विराजै कुण्डल राजै तव प्रताप महिमा बरना ।
तव हेतु घनेरा सब प्रभु तेरा लेत नाम पातक हरना ॥

दो०-करहु कृपा अब मोहिं पर, अति छवि ज्योति विराज ।
तेज विपुल तिहुँ लोक महँ, जय जय जय महराज ॥

इति श्रीमहासूर्यपूर्वदिशि उदयोनाम सप्तमोऽध्यायः।७।

उत्तर दिशि कहँ उगहिं गोसाँई ।
मैं तोहिं अर्थ कहौं समुझाई ॥
उत्तर दिशि एक नगर विशाला ।
राज करैं तहँ मदन गोपाला ॥
तहाँ शैल एक परम विशाला ।
सत योजन परमान कराला ॥
तापर भानु किरन नहिं जावै ।

इहि विधि पुर अँधियार जनावै ॥
निशा घोर सब पुर अँधियारा ।
उगै न रवि न होइ उजियारा ॥
तहाँ बास कलियुग कर होई ।
पाप मलेच्छ बसत तहँ सोई ॥
यहि कारण तहँ उगे न भानू ।
मैं तोहिं अर्थ कहौं परमानू ॥
एक समय अचरज अति भयऊ ।
नारद मुनि तहवाँ चलि गयऊ ॥
देखा नगर सकल अँधियारा ।
धर्म कथा कर कहूँ न प्रचारा ॥
फिर-फिर सकल नगर मुनि देखा ।
अघ व्यवहार अपर नहिं लेखा ॥
मन महँ नारद कीन्ह विचारा ।
कहँ आये यहि पुर अँधियारा ॥

अस कहि नारद कोपेउ जबहीं ।
दीन्हो शाप नगर कहँ तबहीं ॥
कुष्ठी होउ सकल नर-नारी ।
धर्म कथा कर नाम बिसारी ॥
कुष्ठ बरन भरि सबके अंगा ।
आँठो गात कुष्ठ तन भंगा ॥
रहा न कोऊ कुष्ठ विहीना ।
जबहीं शाप मुनीश्वर दीन्हा ॥
व्याकुल भये सकल नर नारी ।
त्राहि-त्राहि सब करहिं पुकारी ॥
शाप देइ उत्तर कहँ आये ।
अब हम यह मुनि चरित्त सुनाये ॥
अब कहहू मुनि पूछौं तोहीं ।
उग्र शाप कब छूटै ओहीं ॥
अंग बरन मुनि देखा कैसा ।

हंस समान श्वेत भा जैसा ॥
बिदा होइ भानु घर कहँ आये ।
हरषित होइ भानु गुण गाये ॥
धनि आदित काया के राजा ।
ज्योति जासु तिहुँ लोक विराजा ॥
अस्तुति रविकर नारद गाये ।
कोटि विप्र तहँ नेवत पठाये ॥
भोजन सुधा समान बनाये ।
प्रेम सहित सब विप्र जेवाँये ॥
अश्वमेध मुनि करन सो लागे ।
तीन लोक के दारिद भागे ॥
सब कहँ नारद नेवत पठाये ।
निज-निज वाहन चढ़ि-चढ़ि आये ॥
ब्रह्मा विष्णु और त्रिपुरारी ।
आये सबहिं सहित नर-नारी ॥

बहु प्रकार मुनि सबहिं जेंवाये ।
हरषित होय भानु गुण गाये ॥
वेद पढ़े मुनि गिरा सुधारी ।
हरषित गावहिं मंगल नारी ॥
चन्दन अक्षत लै पकवाना ।
पूजा करहिं मुनि धरि ध्याना ॥
ब्रह्मादिक निज लोक सिधाये ।
प्रेम पुलक सूरज गुन गाये ॥

दो०-यज्ञ कीन्ह मुनिवर सविधि, शोभा बरनि न जाय ।
देव कोटि तैंतिस तहँ, हरषि भानु गुण गाय ॥

इति श्रीसूर्यनारायणवर्णनो नाम अष्टमोऽध्यायः।८।

जो नर धरै सूर्य पर ध्याना ।
ताकर होइ पुत्र कल्याना ॥
जो रवि कथा सुनै मन लाई ।
तापर दिनकर होहिं सहाई ॥
धर्म प्रताप आदित बलवाना ।

तेज प्रताप है अग्नि समाना ॥

दो०-पूछत गिरिजा शम्भुसन, भानु चरित मन लाय ।
दक्षिण दिशा पुनीत है, नाथ कहौ समुझाय ॥

हे गिरिजा सुनु शैलकुमारी ।
कहिहौं भानु चरित विस्तारी ॥
कहन लगे शिव कथा रसाला ।
जेहि विधि दक्षिण उगहिं कृपाला ॥
वर्णन करहिं अर्थ समुझाई ।
सुनहु सत्य गिरिजा मनलाई ॥
दक्षिण दिशि एक नगर अनूपा ।
जयमल विप्र तहाँ कर भूपा ॥
हर्षित भजन करै दिन राती ।
तहाँ करैं प्रभु सुख बहु भाँति ॥
यहि विधि प्रभुकर ज्योति विराजै ।
अनहद नाद घण्ट धुनि बाजै ॥

तैंतिस कोटि देवता जहवाँ ।
श्री सूर्य के आश्रम तहवाँ ॥
दक्षिण दिशि काशी परियागा ।
तहँ के लोग सकल बड़ भागा ॥
दोउ बलभद्र सहोदर संगा ।
तहाँ बसै सरिता वर गंगा ॥
कृपा सिन्धु प्रभु परम अगाधा ।
निशिदिन सुमिरत नाथ अबाधा ॥

दो०-दक्षिण दिशा पुनीत है, सुनहु उमा मन लाय ।
अर्थ समय जैसे अहैं, तैसे कहौं बुझाय ॥

कलि व्यापित जबहीं होइ जैहैं ।
मानुष को मानुष धरि खैहैं ॥
तब दक्षिण दिशि उदय कराहीं ।
आगिल अर्थ कहौं तुम पाहीं ॥
धर्म कथा होइहैं दिन राती ।

नेम धर्म करिहैं बहु भाँति ॥
विप्र जेंवाय के होम करावै ।
वाहि भस्म ले अङ्ग लगावै ॥
विप्र जेंवाय आप तब खैहैं ।
निशिदिन कथा सूर्य की गैहैं ॥
यहि प्रति कमला करहिं निवासा ।
धर्म कथा कर होइ प्रकाशा ॥
मिथ्या वचन कोउ ना भाषै ।
धर्म विचार भानु पर राखै ॥

दो०-द्वादश कला उगहिं प्रभु, आदि अन्त तव नाय ।
पूर्व जन्म के सकल अघ, कहत सुनत क्षय जाय ॥

इति श्रीम सूर्यमहापुराण कलिवर्णनोनाम नवमोऽध्यायः।९।

बोलीं तबहिं उमा हरषाई ।
दया करहु कछु कहौं गुसाँई ॥
जेहि सेवा करि नर सुख पावै ।
जाहि भजे शुभ गति नर पावै ॥

रवि महिमा अति अगम अपारा ।
कहिये नाथ कथा विस्तारा ।।
जाकी भक्ति मिले सब धानी ।
सो प्रसंग सब कहहु बखानी ।।
अति उत्तम यश रवि अवगाहा ।
सो प्रभु बरनौ सहित उछाहा ।।
कस स्वरूप किमि रूपहिं करहीं ।
किमि शीतल किमि तेजहिं धरहीं ।।
यह प्रति मास कहु उदय गोसाँई ।
किमि व्रत करि नर मोक्षहिं पाई ।।
सुनहु सत्य सब कहौं बिचारी ।
जेहि सुनि होय ज्ञान अधिकारी ।।
अस कहि शिवपद वन्दन कीन्हा ।
हर्षि शम्भु हरि सुमिरन कीन्हा ।।

दो०-धन्य धन्य गिरजा सुनहु, पूछेहु जनहित लाग ।
रविचरित्र पावन परम, सुनहु सहित अनुराग ।।

रविमण्डल कर सुनु विस्तारा ।
जेहिं विधि तन स्थूल अपारा ॥
द्वादश सहस योजन चहुँ फेरा ।
रविमण्डल जानहु शुभ डेरा ॥
अति उत्तम जग तेज अपारा ।
गये समीप न होय उबारा ॥
दश सहस्र रवि नयन गिनाये ।
अति विशाल कहि देवन गाये ॥
उदय होत त्रिभुवन तम भागे ।
तासन हम नित नित वर माँगे ॥
पार ब्रह्म साक्षी तेहि जाने ।
सुमिरत हिये ध्यान उर आने ॥
उदय होत विधि रूपहिं जानो ।
मध्य विष्णु का रूप बखानो ॥
सन्ध्या रूप रुद्र गति केरी ।

तीन काल शुभ मूरति टेरी ॥
यह अनुमान सदा पद वन्दिय ।
निश्चय करि विश्वास अनन्दिय ॥
पावहिं गति ते नर बड़ भागी ॥
जाके चरण कमल लौ लागी ॥

दो०-यहि विधि जानेउ हे उमा, रवि पूजा जेहिं हेतु ।
सिद्धि तासु मन कामना, चारि पदारथ देतु ॥

और सुनहु प्रभु की प्रभुताई ।
सूर्य कथा सब देवन गाई ॥
द्वादश तन धरि वेद बखाने ।
द्वादश कथा उद्योग विधाने ॥
द्वादश मास के द्वादश नामा ।
उदय करे रवि जग सुखधामा ॥
माघ मास मासन महँ नीका ।
कह श्रुति सब मासन के टीका ॥
मकर उदय कहि वरुण सुनामा ।

भक्ति ज्ञान ध्यान कर जामा ॥
चैत्र मीन रवि उदय कराहीं ।
नाम देव जग जाने ताहीं ॥
मेष वैशाख भानु जब होई ।
उच्च नाम रवि कहिहैं सोई ॥

दो०-इन्दु नामव्रत ज्येष्ठ तप, सब प्रकार सुख देहिं ।
रवि आषाढ़ तप कर मिथुन, जासु नाम जप लेहिं ॥

सावन करक नाम रवि केरा ।
भादौं सिंह भवन का फेरा ॥
आश्विन कन्या राशि विराजै ।
सुरनर नित्य नाम शुभ छाजै ॥
कार्तिक तुला दिवाकर नामा ।
उदय करहिं रवि जग सुखधामा ॥
मार्गशीर्ष वृश्चिकहिं सुहाई ।
मित्र नाम सब जग सुखदाई ॥
पूस मास धनु राशि गिनाये ।

विष्णु सनातन नाम कहाये ॥
यहि विधि द्वादश मास के माहीं ।
मास मास प्रति उदय कराहीं ॥
औरो वेद कहै अस बानी ।
मास मास प्रति उदय भवानी ॥

दो०-सुनो उमा यह सकल व्रत, दिनकर याहि विधान ।
जाहि भजै शुभ गति मिले, गावै वेद पुरान ॥

इति श्रीसूर्य.सूर्यनामवर्णनोनाम दशमोऽध्याय:।१०।

मन स्थिर कर सुनु शैलकुमारी ।
व्रतहि विधान कही विस्तारी ॥
शनीवार लघु भोजन कीजै ।
आदित बार धरम बहु कीजै ॥
दन्त काष्ठ पहिले कर लीजै ।
तब स्नानहि चित्तहिं दीजै ॥
उदय होत रवि अञ्जलि देई ।
सात प्रदक्षिण करिये सोई ॥

तब धोती अरु लाल उपरना ।
होम करे पढ़ि मन्त्र सपरना ॥
बन्दि दण्डवत रवि कहँ करई ।
दृढ़ विश्वास चित्त महँ धरई ॥
अगहन ते यह व्रतहिं बखानी ।
ताकर विधि अवश्य करि जानी ॥
अगहन में तुलसी दल खण्डित ।
व्रतहिं करे सूक्ष्म ते पण्डित ॥
पूस मास गो घृत पल तीना ।
अति पुनीत कार्य कर दीना ॥

दो०-माघ मास व्रत जो करे, मुष्टि तीन तिल खाय ।
व्रत विधान जो करहिं नर, रवि लोकन को जाय ॥

फागुन मास बरत सुखदाई ।
क्षीर तीन पल भोजन खाई ॥
चैत मास कर सुनहु विधाना ।

दही तीन पल अधिक न आना ॥
वैशाख गोघृत गोबर आना ।
तीन पल ते अधिक न माना ॥
ज्येष्ठ मास कर याहि विधाना ।
तीन अंजुली करै जलपाना ॥
मास आषाढ़ बरत कष्ट धरई ।
तीन मरिच अवलम्बन करई ॥
सावन मास बरत रवि नीका ।
खाँड़ तीन पल है सबही का ॥
भादों मास अमित सुखदाई ।
त्रै अञ्जुलि गोमूत्रहिं खाई ॥
आश्विन मास बरत शुभ जाने ।
फल केदली के तीन बखाने ॥
कार्तिक मास बरत जो करई ।
त्रै फल हव्य आनके धरई ॥

दो०-यहि विधि बारह मास लगि, व्रतविधान कै लीन ।
रवि-पूजा विधिवत् करे, मुनिदुर्लभ सो दीन ॥
तुम सन सुनत विचार नित, कह्यो सो प्रकटे आइ ।
अब जो कछु कहिये उमा, सो बरनौ हरखाई ॥

इति सूर्यम.पु.सूर्यकथावर्णनोनाम एकादशोऽध्यायः ।११।

सो सुनि उमा हर्ष अति भई ।
कीन मोह व्यथा सब गई ॥
धन्य धन्य सुनु शंकर स्वामी ।
कथा कही निज हरषित गामी ॥
जे कर्ता रवि पूजत लोगा ।
करहि अनन्द मिटहिं सब रोगा ॥
कथा और पुनि कहौ गुसाँई ।
सो तुम और कुछ करो सहाई ॥

इति श्रीसूर्यमहापुराणे सूर्यमाहात्म्ये उमामहेश्वरसंवादे सूर्यकथांवर्णनो नाम द्वादशोऽध्यायः।१२। 卐

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता-
श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१

मुद्रक-भारत प्रेस, कचौड़ीगली, वाराणसी-१

हमारे यहाँ की प्रकाशित धार्मिक पुस्तकें मँगाकर अवश्य लाभ उठावें

श्रीसूक्त- पुरुषसूक्त भा०टी०	१५)	मानसागरी भा०टी०	१००)
शिवपुराण भाषा ग्लेज	२००)	जातकाभरण भाषा टीका	८०)
चाणक्यनीतिदर्पण भा०टी०	२०)	बृहज्ज्योतिषसार भाषा टीका	७५)
रामायण मध्यम भा०टी०	२००)	ताजिक नीलकण्ठी भाषा टीका	७५)
रामायण मध्यम मूल दोहा चौपाई	७५)	कर्मविपाक संहिता भाषा टीका	७५)
वाल्मीकीय रामायण भाषा	२००)	चमत्कार चिन्तामणि भाषा टीका	८)
अध्यात्म रामायण भा०टी०	२००)	भाव कुतूहल भाषा टीका	७५)
आनन्द रामायण भाषा	२००)	मुहूर्तचिन्तामणि भाषा टीका	६०)
राधेश्याम रामायण	४०)	लग्नचन्द्रिका भाषा टीका	४०)
भृगुसंहिता भाषा	१५०)	घाघ-भड्डरी की कहावतें भा०टी०	२०)
प्रेमसागर	६०)	विश्वकर्मा प्रकाश भाषा टीका	७५)
श्रीमद् देवी भागवत भा०टी० सांची	६००)	स्त्री जातक भाषा टीका	३०)
श्रीमद्भागवत महापुराण		शीघ्रबोध भाषा टीका	२०)
भा०टी० साँची	५००)	शिव स्वरोदय भाषा टीका	२०)
सुखसागर भाषा मध्यम	२००)	प्रभुविद्या प्रतिष्ठार्णव	२५०)
दुर्गार्चन-पद्धति भा०टी०	१००)	कुण्ड निर्माण स्वाहाकार पद्धति	६०)
दुर्गासप्तशती भा०टी०		विष्णुयाग पद्धति भाषा टीका	२००)
सजिल्द । मोटे अक्षरों में	६०)	विवाह पद्धति भाषा टीका	२५)
दुर्गा सप्तशती भा०टी०	२५)	उपनयन पद्धति भाषा टीका	२५)
दुर्गा सप्तशती भाषा ग्लेज	२०)	वाशिष्ठी हवन पद्धति भाषा टीका	२५)
दुर्गा सप्तशती ३२ पेजी मूल	२५)	गणपति प्रतिष्ठा पद्धति भाषा टीका	२५)
दुर्गा सप्तशती ६४ पेजी मूल	२०)	धनिष्ठादि पञ्चक शान्ति भा०टी०	२०)
दुर्गाकवच भा०टी०	८)	संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत कथा	
दुर्गा कवच ३२ पेजी मूल	३)	भा०टी०	६०)
दुर्गा रामायण	३०)	एकादशी माहात्म्य भाषा	१५)
गणेश सहस्रनाम भाषा टीका	३०)	कार्तिक माहात्म्य भाषा टीका	५०)
मन्त्र-सागर भाषा टीका	७५)	हनुमद्-रहस्य भाषा टीका	६०)
बगलोपासनपद्धति-बगलामुख		गायत्री-रहस्य भाषा टीका	६०)
रहस्य भाषा टीका	४०)	बृहत्-स्तोत्र रत्नाकर बड़ा	७५)
दत्तात्रेय तन्त्र-भाषा टीका	२०)	रघुवंश महाकाव्य प्रथम सर्ग	१५)
उड्डीश तन्त्र भाषा टीका	२०)	हितोपदेश मित्रलाभ भाषा टीका	२०)
रसराजमहोदधि पाँचों भाग	२००)	किरातार्जुनीयम् १-२ सर्ग भा०टी०	१५)
बृहत्पाराशरहोराशास्त्र भा०टी०	२००)	सोरठी बृजाभार ९६ भाग	७५)

प्रकाशक - श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१